डंपसाइट बंद होने पर सामूहिक राजनीतिक बयान

दुनिया भर में, सरकारें और प्राइवेट लोग मॉडर्नाइज़ेशन, क्लाइमेट एक्शन या शहरी व्यवस्था के नाम पर डंपसाइट बंद कर रहे हैं। लेकिन उन लाखों कचरा बीनने वालों के लिए जिन्होंने दशकों से रीसाइक्लिंग सिस्टम को बनाए रखा है, ये बंदियां बदलाव जैसी नहीं लगतीं। ये बेदखली हैं। इनका मतलब है काम करने का अधिकार खोना, शहर से बाहर निकाल दिया जाना, उन फैसलों से बाहर रखा जाना जो हमारी ज़िंदगी को बनाते हैं, और उन पर्यावरण समस्याओं के लिए दोषी ठहराया जाना जिन्हें हमने नहीं बनाया।

जिसे तरक्की के तौर पर दिखाया जाता है, उसका नतीजा अक्सर दबाव होता है: साइटें रातों-रात बंद हो जाती हैं, पुलिस सोशल सर्विस से पहले पहुंच जाती है, और कंपनियां उन मज़दूरों को पहचाने बिना सामान पर कब्ज़ा कर लेती हैं जिन्होंने उन चीज़ों को कीमती बनाया था।

अफ्रीका से लेकर एशिया-पैसिफिक तक, अमेरिका से लेकर यूरोप तक, हमारे सहयोगी जब अपने काम की जगहें बंद करते हैं , तो एक ही पैटर्न बताते हैं : कोई सलाह नहीं, कोई गारंटी नहीं, और तथाकथित “नए सिस्टम” में कचरा बीनने वालों के लिए कोई जगह नहीं। काम करने वालों को बाहर रखने को सही ठहराने के लिए बार-बार एनवायरनमेंटल बातों, टेक्निकल भाषा और रेगुलेटरी फ्रेमवर्क का इस्तेमाल किया जाता है—खासकर महिलाओं, माइग्रेंट्स और नस्लीय समुदायों को, जो पहले से ही कई तरह की असमानता का सामना कर रहे हैं।

ये अलग-अलग मामले नहीं हैं; ये एक ग्लोबल पॉलिटिकल ट्रेंड दिखाते हैं जो हमारी रोज़ी-रोटी, हमारी इज्ज़त और दुनिया भर में ऑर्गनाइज़्ड कचरा बीनने वालों के आंदोलनों के जारी रहने के लिए खतरा है।

हम इस बात को नहीं मानते कि कचरा बीनने वाले एक ऐसी समस्या हैं जिसे खत्म किया जाना चाहिए। पीढ़ियों से, हमने डंपसाइट से बहुत सारा सामान हटाया है, एमिशन कम किया है, और इकोसिस्टम को बचाया है—रीसाइक्लिंग, दोबारा इस्तेमाल और रिपेयरिंग के ऑफिशियल एनवायरनमेंटल एजेंडा का हिस्सा बनने से बहुत पहले। आज, बहुत सारा कीमती सामान बर्बाद होने या कॉर्पोरेशन द्वारा कब्ज़ा किए जाने के बावजूद, कचरा बीनने वालों को रीसाइकिल होने वाली, दोबारा इस्तेमाल होने वाली चीज़ों और रिपेयर होने वाली चीज़ों तक पहुंच से लगातार मना किया जा रहा है। ऐसा सिस्टम जो प्रॉफिट बचाते हुए वर्कर को हटा देता है, न तो मॉडर्न है और न ही सस्टेनेबल।

शुरू से ही कचरा बीनने वालों की पूरी भागीदारी के बिना कोई भी डंपसाइट बंद करना सही नहीं हो सकता। हम उन मज़दूरों के तौर पर पहचान की मांग करते हैं जिन्हें अधिकारों की ज़रूरत है, और किसी भी वेस्ट सिस्टम सुधार की प्लानिंग, लागू करने और मॉनिटरिंग में अहम भूमिका की मांग करते हैं। किसी भी रीस्ट्रक्चरिंग में सुरक्षित रोज़ी-रोटी, सामान तक लगातार पहुँच, और अलग रास्ते चुनने वालों के लिए असली विकल्प की गारंटी होनी चाहिए। इससे कम कुछ भी ज़बरदस्ती हटाना है।

हम हर तरह के क्रिमिनलाइज़ेशन और दमन की निंदा करते हैं। अचानक बंद करना, हिंसक तरीके से निकालना, और ऐसी बातें जो कचरा बीनने वालों को पर्यावरण की तरक्की में रुकावट बताती हैं, एक सही और लोकतांत्रिक बदलाव के साथ मेल नहीं खातीं।

हम एक साफ़ लाइन खींचते हैं: हम ऐसे क्लोजर स्वीकार नहीं करेंगे जो हमारा काम मिटा दें, हमें मटीरियल तक पहुँच से रोक दें, ऐसे प्रोजेक्ट जो हमारी वैल्यू छीन लें, या ऐसे मॉडल जो गरीब वर्कर को डिस्पोजेबल समझकर काम से निकाल दें।
हमारा विज़न ऐसे शहरों का है जहाँ कचरा बीनने वालों को एनवायरनमेंट वर्कर के तौर पर पहचाना जाए, जहाँ काम करने के लिए अच्छे हालात हों, पक्की इनकम हो, पॉलिटिकल आवाज़ हो, और जिस सिस्टम को वे बनाए रखते हैं, उस पर उनका कंट्रोल हो।

हम एक ग्लोबल आवाज़ में बोलते हैं: हमारे साथ काम करें। हममें इन्वेस्ट करें। हमें पहचानें। हमारे साथ पार्टनरशिप करें।
जिस दुनिया में कचरा बीनने वाले नहीं होंगे, वह दुनिया ज़्यादा कचरे वाली होगी—और न्याय कम होगा।